मिर्च की फसल के प्रमुख रोग व् कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन

डॉ आर. पी. सिंह

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

प्रमुख रोगः

1. आर्द्र गलन रोगः– यह पौधशाला की प्रमुख बीमारी है जो फफूँद के द्वारा होता है । जमीन की सतह से प्रभावित पौधा गलकर नीचे गिर जाता है ।

समेकित प्रबन्धन

- प्रतिवर्ष नर्सरी के स्थान को बदलते रहना चाहिए ।
- पौधशाला की क्यारी भूमि की सतह से थोड़ी ऊपर उठी हुयी एवं मृदा हल्की बलुई होनी चाहिए ।
- बीज को घना नहीं बोना चाहिए ।
- सिचाई हल्की एवं आवश्यकतानुसार करनी चाहिए ।
- बुआई से पूर्व कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम/किग्रा. बीज दर से या ट्राईकोडरमा 5–10 ग्राम/किग्रा. बीज दर से शोधन करना चाहिए ।
- खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैंकोजेब की 2 ग्राम /लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए ।

2. शीर्षारम्भी (डाइबैक)/फल सडन रोगः– मिर्च का यह अति व्यापक रोग है । यह रोग फफूँद के द्वारा होता है । इस रोग से प्रभावित पौधों की टहनियाँ ऊपर से नीचे की तरफ सूखती जाती हैं, फल सड़ने लगता है, पौधे बौने रह जाते हैं ।

समेकित प्रबन्धनः

- कार्बेन्डाजिम या थिरम 75% WP. कार्बेन्डाजिम 50% WP (2:1) ग्राम/किग्रा. बीज दर शोधन करके बुआई करना चाहिए ।
- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए । रोग ग्रसित टहनियों तथा प्रभावित फल को एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिए ।

- खड़ी फसल पर रोग के लक्षण दिखाई देने पर डाईफोलाटान 3 ग्राम/लीटर पानी या बेनलेट 1–1.5 ग्रामध्लीटर पानी या क्लोरोथैलोनिल 2 ग्राम/लीटर पानी या विटरटेनाल 1–2 ग्राम/लीटर पानी की दर से 2–3 छिडकाव करना चाहिए ।

3. गुरचा/पत्ती मरोड़क रोगः– यह एक विषाणु रोग है जो सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है । इसके प्रकोप से पत्तियां सिकुड़ने लगती हैं, पौधा छोटा रह जाता है, पुष्पपुंज अविकसित रह जाते हैं, दो गाठों के बीच की दूरी कम हो जाती है तथा झाड़ीनुमा दिखाई देता है जिससे फल नहीं लगता है ।

समेकित प्रबन्धन

- रोगी पौधों को उखाडकर नष्ट कर देना चाहिए ।
- पौधशाला में बुआई करते समय मिटटी में कार्बोफ्यूरान 5 ग्राम/वर्ग मी. की दर से मिलाना चाहिए ।
- पौधशाला को मच्छरदानी युक्त जाली से ढकना चाहिए ।
- टमाटर के खेत के चारों तरफ मक्का, ज्वार, बाजरा लगाना चाहिए ।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर कानफिडोर 3 मिली/10 लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए ।

4. मोसैक रोगः– पत्ती की मध्य शिराओं को छोडकर पर्ण हरीतिमा समाप्त हो जाती है । प्रभावित पौधों की पत्तियां अनियमित रूप से सिकुडकर पीली हो जाती हैं जिससे पौधों का विकास रूक जाता है । फूल व् फल कम लगते हैं । इस रोग का फैलाव माहूँ/थ्रिप्स कीट के द्वारा होता है ।

समेकित प्रबन्धनः

- रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए ।
- बैगन की फसल के पास टमाटर, तम्बाकू, मिर्च, दलहनी फसलें तथा कद्दूवर्गीय फसलें न लगायें ।
- चूँकि इस कीट का प्रसार माहूँ के द्वारा होता है इसके नियत्रण हेतु डाईमेंथोएट 30 EC 2 मिली/ली पानी की दर या मेटासिस्टाक्स 1 मिली/ली पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए ।

5. चूर्णी फफूंदी रोगः– यह वायुजनित रोग है । पत्तियों के ऊपरी सतह, निचले भाग तथा तनो पर सफेद चूर्ण जम जाता है जिससे पौधे पीले पड़कर मुरझाने लगते हैं । नम वातावरण में यह रोग तेजी से फैलता है ।

समेकित प्रबन्धनः

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए ।

- फसल पर रोग के लक्षण दिखाई देने पर घुलनशील सल्फर की 2–4 ग्रामध्लीटर पानी की दर से 2–3 छिड़काव 15 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए । अथवा ट्राईडेमेफान या ट्राईडेमेलान या विनोमाइल 1 ग्राम/लीटर पानी या पेंकानजाल 1 मिली/4 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए ।

6. उकठा रोगः– मिर्च का यह रोग फफूँद के द्वारा होता है । इस रोग में पत्तियां नीचे की ओर झुक जाती हैं और पीली पड़कर सूख जाती हैं । अन्त में पूरा पौधा पीला पड़कर मर जाता है ।

समेकित प्रबन्धनः

- खेत की ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे हानिकारक फफूँद तेज धुप से नष्ट हो जाय ।
- भारी मिटटी में मिर्च की रोपाई नहीं करनी चाहिए ।
- भूमि शोधन ट्राईकोडरमा हारजिएनम 1% WP 1 किग्रा.. सड़ी गोबर की खाद 80–100 किग्रा./एकड़ की दर से करना चाहिए ।
- कार्बेन्डाजिम या थिरम 75% WP. कार्बेन्डाजिम 50% WP (2:1) ग्राम/किग्रा. बीज दर शोधन करके बुआई करना चाहिए ।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर थायोफानेटमिथाइल 2–3 ग्राम/लीटर पानी की दर से जड़ क्षेत्र में तर छिडकाव करना चाहिए ।

प्रमुख कीटः

1. थ्रिप्सः– इस कीट के शिशु व् वयस्क दोनों पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं । इसके प्रकोप से पत्तियां ऊपर की ओर मुड़कर सूख जाती हैं जिससे कारण पैदावार प्रभावित होती है । यह कीट मोसैक रोग का वाहक भी है ।

समेकित प्रबन्धनः

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए ।
- इमिडाक्लोप्रिड 70 % 2.5 ग्रामधकिग्रा. बीज दर से शोधन करके पौधशाला में बुआई करना चाहिए ।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस.के.ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए अथवा अजेडीरेचटिन 0.03% 2.5–5.0 ली./हे. 500–750 ली पानी में घोलकर छिडकाव करें ।
- कीटनाशी रसायनों जैसे– इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 3 मिली/10 ली. पानी या इथोफेनप्राक्स 10% ई.सी. 1.25 मिली/ली पानी या बूफ्रोफेजिन 25% एस.पी. 1 मिली/ली पानी या लैम्डासाईंहैलोथ्रिन 5%

ई.सी 1 मिली/2 ली पानी की दर से घोल बनाकर 10–12 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए ।

2. पीली माईटः– यह कीट पीले रंग कीट होता है, पीठ पर सफेद धारियां पाई जाती हैं । यह कीट आसानी से दिखाई नहीं देती है ु इसका प्रकोप होने पर पत्तियां नीचे की तरफ मुड़ जाती है तथा देखने में सिकुड़ी लगती है । इस कीट के शिशु तथा प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं ।

समेकित प्रबन्धनः

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए ।
- माईट का प्रकोप होने पर सल्फर धूल 10% की 20–25 किग्रा./हे. की दर से भुरकाव करना चाहिए या घुलनशील सल्फर 2 ग्राम/लीटर पानी या प्रोपारगाईट 57% EC 3.5 मिली./लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए ।